विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८५

नित नवल
राजदेव मण्डल

नओ कृतिक साहित्यिक आ
स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

कविता, उपन्यास, नाटक, पटकथा
आ सम्पादकीय समीक्षा

LXXXV

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८५ • **LXXXV**

नित नवल राजदेव मण्डल

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८५ · LXXXV

नित नवल राजदेव मण्डल

नओ कृतिक साहित्यिक आ स्रोत -समीक्षात्मक अध्ययन

कविता, उपन्यास, कथा, नाटक, पटकथा आ सामाजिक न्याय

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–८५ · LXXXV

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल राजदेव मण्डल

उपशीर्षक : नओ कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

पाठाधार : उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त “नित नवल राजदेव मण्डल”क DOCX पाण्डुलिपि।

समीक्षाक आधार आ सीमा

ई आलोचना मूल साहित्यिक रचनासभक स्वतंत्र पूर्ण पाठक सम्पूर्ण जाँच नहि, गजेन्द्र ठाकुर द्वारा तैयार उपलब्ध समीक्षात्मक अध्ययनसभक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। मूल कृतिसभक स्वतंत्र पूर्ण प्रतिक अभावमे कथानक, प्रकाशन-वर्ष, उद्धरण अथवा ऐतिहासिक तथ्यक विशिष्ट दावाकेँ स्वयंसिद्ध प्रमाण नहि मानल गेल अछि। प्रस्तुत अध्ययनक कथन, आलोचकक निर्णय आ एतयक सम्पादकीय विवेचन अलग राखल गेल अछि।

अध्ययनमे ग्रन्थ, व्यक्ति अथवा घटना सम्बन्धी जे विवरण आएल अछि, ताहि पर प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि; परन्तु स्वतंत्र अभिलेखीय सत्यापन अगिला संस्करणक कार्य अछि। एहि सीमा स्पष्ट करब साहित्यिक पुनर्पाठक पारदर्शिताक हिस्सा अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक परिप्रेक्ष्य

द्वितीय विभाग : क्रमिक कृति-पाठ

- अम्बरा (कविता)
- बसुंधरा (कविता)
- हमर टोल (उपन्यास)
- जल भँवर (उपन्यास)
- जाल (पटकथा)
- लाज (एकांकी)
- पंचैती (लघु पटकथा)
- त्रिवेणीक रंग (कथा)
- वापसी (एकांकी)

तृतीय विभाग : साझा सूत्र आ विधागत प्रश्न

चतुर्थ विभाग : आख्यान, प्रमाण-विवेक आ सम्पादन

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न

टिप्पणी : ई विभाग-क्रम अछि; वास्तविक पृष्ठ-संख्या PDF क भीतर पृष्ठांकसँ देखल जा सकैत अछि।

प्रथम विभाग : पुस्तक, पाठाधार आ आलोचनाक परिप्रेक्ष्य

१. 'नित नवल राजदेव मण्डल' : साहित्यिक पठनक प्रवेश

गजेन्द्र ठाकुरक एहि संग्रहमे ९ साहित्यिक अध्ययन एक साथ उपस्थित अछि। कृतिसभक शीर्षक, विधा आ प्रश्न-विस्तार देखैत बुझाइत अछि जे ई एकरेखीय साहित्यिक परिचय नहि; पाठ, समाज आ कलात्मक रूपक परस्पर सम्बन्धक क्रमिक अध्ययन अछि। संग्रहक केन्द्रीय क्षेत्र कविता, उपन्यास, कथा, नाटक, पटकथा आ सामाजिक न्याय अछि।

एहि खण्डक सम्पादकीय प्रस्ताव ई नहि जे मूल लेखकक पक्ष मे अथवा विरुद्ध एक निर्णायक फैसला सुना देल जाए। मुख्य प्रश्न ई अछि जे ठाकुर कोन पुस्तक चुनैत छथि, कोन पाठ-साक्ष्य पर विश्वास करैत छथि, कोन व्याख्या बनबैत छथि, आ अपन निर्णयक सीमा केना चिह्नैत छथि। आलोचना पर आलोचनाक ई दोगुना उत्तरदायित्व अध्ययनकेँ अधिक कठोर बनबैत अछि।

२. मूल कृति, ठाकुरक अध्ययन आ सम्पादकीय पुनर्पाठ

मूल साहित्यिक कृतिक रचनाकार, ओकर समीक्षक गजेन्द्र ठाकुर, आ प्रस्तुत सम्पादकीय समीक्षाक स्तर अलग छथि। जे घटना मूल कृतिक कथा-संसारमे घटैत अछि से कथात्मक तथ्य थिक; जकर व्याख्या ठाकुर करैत छथि से आलोचनात्मक स्थापना थिक; एहि समीक्षाक निर्णय ओहि स्थापनाक प्रमाण-सम्बन्ध आ शिल्पविश्लेषण पर केन्द्रित अछि।

एहि भेदक अभावमे प्रशंसा दोहराएल जा सकैत अछि अथवा मूल पुस्तकक तथ्य पर बिना देखनहि फैसला बनि सकैत अछि। एतय दावाक स्तर स्पष्ट रखबाक पद्धति अपनाओल गेल अछि।

३. साहित्यिक विवेक आ सामाजिक उत्तरदायित्व

लोकजीवन, श्रम, स्त्रीक सामाजिक स्थिति, जाति आ सार्वजनिक संस्था सन विषय साहित्यिक लेखनकेँ तत्काल नैतिक महत्त्व दैत छथि। मुदा रचनाक साहित्यिक मूल्य ओकर

विषय मात्रसँ नहि, भाषा, बिम्ब, दृश्य, कथनकर्ता, काल आ संरचनाक भीतर बनैत अछि। ताहि कारण विषयक सामाजिक गम्भीरता आ कलात्मक सिद्धिक अन्तर राखब आवश्यक अछि।

ठाकुरक अध्ययनसभक जे भाग ई भेद निभबैत अछि ओ अधिक विश्वासयोग्य बनैत अछि। जतय सामान्य सदिच्छा आलोचनाक निष्कर्ष बनि जाइत अछि, ओतय अगिला संशोधन लेल विशेष पाठ-साक्ष्य जोड़ल जाएबाक चाही।

द्वितीय विभाग : उपलब्ध अध्ययनक क्रमिक पठन

४. 'अम्बरा' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र २००८ केर कोसी-बाढ़क पृष्ठभूमि; 'बाढ़िक चित्र'क छः दृश्य; 'जाति', 'चीड़ीक जाति', 'त्रिशंकु' आ श्रमक बिम्ब अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'अम्बरा'क अध्ययनक सघन क्षण 'बाढ़िक चित्र'क छः दृश्य पर केन्द्रित अछि। बाढ़िक काव्यात्मक अनुभवकेँ केवल विनाशक एक दृश्य नहि मानि मातृदेह, बालक, गाछपर अटकल जीवन, राहतक अभाव आ प्रशासकीय गणनाक अन्तरक रूपमे पढ़ल गेल अछि। एतय ठाकुरक निकटपाठ भावुक करुणा आ राज्यक उत्तरदायित्वक तनावकेँ एकहि कथात्मक क्रममे देखबैत अछि।

'जाति'क संक्षिप्त मौन, 'चीड़ीक जाति'क रूपक आ 'त्रिशंकु'क विवाह-संकट अलग-अलग शिल्पसँ सामाजिक बहिष्कार उघारैत अछि। सब रचनाकेँ एकहि 'जाति-विरोध'क उदाहरण घोषित करब पर्याप्त नहि; रूपकक अन्तराल, निहित भय आ सामाजिक कथनकर्ता अलग परीक्षा चाहैत अछि। अध्ययनमे एहि अन्तरक पहचान उपयोगी अछि।

५. 'अम्बरा' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

२००८ केर कोसी संकटक सन्दर्भ एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि थिक, मुदा कविताक दृश्यसभकेँ प्रत्यक्ष घटना-अभिलेख मानि लेब अनुचित अछि। स्थानिक-ऐतिहासिक तथ्य आ काव्यात्मक सत्यक भेद राखि प्रकृतिक पर्यावरणीय रूप देखबाक प्रस्ताव एतय आवश्यक सम्पादकीय सुधारक बिन्दु अछि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : छः दृश्यक कथन-क्रममे पीड़ित व्यक्तिक प्रत्यक्ष आवाज कतए अछि आ कतए कविक निर्णायक नैतिक टिप्पणी?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

६. 'बसुंधरा' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र 'अकाल', 'नँगरा मजदूर', 'कटैत गाछ'; खेती, भूमि, स्त्रीपर डाइन-आरोप, श्रम आ पर्यावरण अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'बसुंधरा'क शीर्षक धरतीक जीवनदायिनी छवि उत्पन्न करैत अछि; मुदा ठाकुरक अध्ययन धरतीकेँ श्रम, स्वामित्व, अभाव आ संघर्षक स्थल बनबैत अछि। 'अकाल'क अभाव, 'नँगरा मजदूर'क देह आ 'कटैत गाछ'क पर्यावरणीय क्षति एक साथ पढ़लासँ प्रकृति-सौन्दर्य आ संसाधन-असमानताक भेद स्पष्ट होइत अछि।

डाइन-आरोप अथवा सामुदायिक स्त्री-विरोधक प्रसंग सामाजिक नैतिकताक कठोर परीक्षा अछि। मुदा अपमानित स्त्रीक जीवनकेँ केवल अत्याचारक दृष्टान्त बना देब प्रतिनिधित्वक सीमा होयत; ओ अपन भाषामे की कहैत छथि, कथनक केन्द्र कोन, प्रतिरोधक सम्भावना कोना बनैत अछि—एहि प्रश्नक स्थान आवश्यक अछि।

७. 'बसुंधरा' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

किसान, श्रमिक आ पर्यावरणक क्षतिक संगतिकेँ अर्थवान बनौनेहुँ रचनाक कलात्मक परिणाम स्पष्ट करबाक लेल शब्द, ध्वनि आ छविक निकटपाठ जरूरी अछि। समाजधर्मी कथ्य आ सफल कविता सदैव समानार्थी नहि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : 'धरती'क रूपक किसान, स्त्री, मजदूर आ वृक्षक आवाजकेँ समान अधिकार दैत अछि कि एक प्रतिनिधि स्वर सभ पर हावी अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

८. 'हमर टोल' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र टोलक सामूहिक जीवन; निर्मला, अजय–शीला, खेलावन भगत; जाति, धर्माधिकार, स्वास्थ्य, चुनाव आ श्रम अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'हमर टोल'पर अध्ययन उपन्यासक नायककेँ कोनो एक व्यक्ति नहि, टोलक सामूहिक सम्बन्ध मानैत अछि। ई प्रस्ताव कथोपकथन, संस्थान, गप्प, श्रम आ अनेक परस्पर प्रतिस्पर्धी आवाजक माध्यमसँ जाँचल जाएबाक चाही। ठाकुर निर्मलाक निःसन्तानताक सामाजिक अपमान, खेलावन भगतक धार्मिक-आर्थिक पहुँच आ अजय–शीलाक सम्बन्धकेँ एक साझा शक्ति-संरचनामे देखबाक प्रयास करैत छथि।

सामुदायिक जीवनक बहुवाचिकता घोषित करब आ वास्तविक स्वतन्त्र आवाज देखेबामे अन्तर अछि। जँ निर्णायक वाचक प्रत्येक पात्रक अनुभवक अर्थ पहिले सँ तय कऽ दैत छथि तँ अनेक नामक उपस्थिति मात्रसँ उपन्यास बहुस्वर नहि बनैत। दैनन्दिन भाषा, हास्य, मतदान आ पंचायतक कार्यपद्धति एहि प्रश्नक प्रयोगशाला अछि।

९. 'हमर टोल' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

अध्ययन सामाजिक व्याप्तिक कारण महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा पाठक आगे संरचना, घटनाक क्रम आ दृश्य-दृष्टिक अधिक नापल तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षित रहैत अछि। टोलक 'हमर' के छथि, ई प्रश्नक उत्तर मात्र शीर्षकसँ नहि भेटैत।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : ककरा सबकेँ टोलक सदस्य मानल गेल अछि, ककर आवाज विमर्शक बाहर रहि जाइत अछि आ कथावाचकक सहानुभूति कोना वितरित होइत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

१०. 'जल भँवर' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र राजेसर–नीता; प्रेम, पंचायत, स्वप्न, कोसी, रोग, बाढ़ि आ जातिगत वर्जना अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'जल भँवर'मे जलक गति आ सामाजिक फाँस एक-दोसराक रूपक बनैत अछि। राजेसर–नीताक निजी सम्बन्धक विस्तार पंचायत, धन, रोग, प्रवास आ बाढ़िक सामूहिक संकट धरि होइत अछि। ठाकुरक आलोचना शीर्षकक एही द्वैध-व्यंजनाकेँ कथावस्तुक परे कथाविन्यासक प्रश्न बनबैत अछि।

स्वप्न, पूर्वाभास आ पुनरावर्तनक उल्लेख मात्र समय-विन्यासक अध्ययन नहि; कवन सूचना पाठककेँ कहिया देल जाइत अछि, कोन भय पहिले सँ रचल जाइत अछि आ अन्तमे के निर्णय लेइत अछि, एहि क्रमक स्पष्ट पुनर्निर्माण चाही। नीताक प्रतिरोधकेँ समाज-सुधारक उदाहरण बनबैत काल ओकर अपन कथनाधिकारे जाँचक आधार होयत।

११. 'जल भँवर' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

बाढ़िक सामूहिक संकट नैतिक परिवर्तनक आरम्भ हो सकैत अछि, मुदा प्राकृतिक आपदा सामाजिक न्यायकेँ स्वतः स्थापित नहि करैत। एहि सन्दर्भमे आलोचकक निष्कर्ष कोन घटनासँ निकलैत अछि आ कोन आशासँ, ई विभाजन जरूरी अछि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : कथाक स्वप्न-क्रम आ वास्तविक घटना-क्रम अलग लिखलासँ 'भँवर'क संरचनात्मक अर्थ कतेक स्पष्ट होयत?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

१२. 'जाल' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र विक्रम, बरसा, सुइदचन, हरिया, फुलिया, चनकी; ऋण, जाति, विवाह, राज्यसेवा आ दृश्य-विन्यास अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'जाल'क अध्ययन कथाक सामाजिक पक्षक संग पटकथाक माध्यमगत शर्तकेँ सेहो ध्यानमे अनैत अछि। ऋण, जाति, वैवाहिक सौदा आ संस्थागत पहुँच जालक अलग-अलग सूत छथि; विक्रम आ बरसाक जीवन एहि ताना-बानामे जकड़ल अछि। मुदा दृश्यात्मक पाठ लेल चित्रणीय क्रिया, दृश्य-स्थान, समयक परिवर्तन आ संवादक अर्थक स्वतंत्र जाँच जरूरी अछि।

हरियाक हिंसा, सुइदचनक महाजनी प्रभुत्व आ फुलिया–चनकीक प्रतिरोध पात्र-भूमिकाक असमान नैतिक संरचना निर्मित करैत अछि। ई प्रश्न बचैत अछि जे प्रतिरोधक स्त्री स्वर कथा-समाधानक केन्द्र बनैत अछि अथवा पुरुष-नायकक विजयक सहायक दृश्य रहि जाइत अछि।

१३. 'जाल' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

'कट टू' अथवा दृश्य-संक्रमणक उल्लेखक आधारपर पटकथाकेँ निर्मित चलचित्र नहि मानब चाही। लिखित दृश्यनिर्देश आ सम्भावित मंचन/चित्रांकनक बीच दूरी स्वीकारने आलोचनाक शिल्पपरक मूल्य बने रहैत अछि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : पटकथाक कोन दृश्य वाचिक व्याख्याक बदला दृश्यात्मक क्रियासँ शक्ति-सम्बन्ध देखबैत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

१४. 'लाज' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र सविता; नौ दृश्य; स्त्रीशिक्षा, जमीनदारी प्रभुत्व, चिकित्सकीय सेवा आ नैतिक प्रत्यभिज्ञान अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'लाज'क नाटकमे शीर्षकक अर्थ यात्रा करैत अछि। आरम्भमे कुल-प्रतिष्ठाक दबावसँ बेटीकेँ रोकेबाक 'लाज', अन्तमे उत्पीड़कक आत्मबोधक 'लाज' बनि सकैत अछि। सविताक शिक्षाक अधिकार आ चिकित्सकीय सेवा एहि परिवर्तनक कथात्मक सेतु छथि। ठाकुरक आलोचना एही नैतिक उलटावकेँ नाटकीय संरचनासँ जोड़ैत अछि।

नौ दृश्यक क्रममे सार्वजनिक संस्था, परिवार आ जमीनदारी प्रतिष्ठाक असमान शक्ति बोलबैत अछि। मुदा अन्तिम क्षमाप्रार्थना वा परिवर्तन यदि बहुत शीघ्र हो तँ नाटकक नैतिक उद्देश्य कथाक विश्वसनीयता पर हावी भऽ सकैत अछि। आलोचना लेल 'नीक सन्देश' आ 'प्रेरक नाट्य'क अन्तर अपरिहार्य अछि।

१५. 'लाज' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

सविताक स्वायत्तता ओकर सेवाधर्मी आदर्शमे विलीन तँ नहि भऽ जाइत? जँ शिक्षित स्त्रीक अधिकारकेँ अन्तमे केवल आनक सेवा करबाक योग्यता मानल जाए तँ पात्रक स्वतन्त्र जीवन-चयन पर विचार अधूरा रहत।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : सविताक शिक्षा ओकर अपन भविष्यक निर्णयक अधिकार बनैत अछि कि नाटकक नैतिक पुरस्कार?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

१६. 'पंचैती' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र नौ दृश्य; अन्तर्जातीय विवाह; गीता, ललिता; लोकन्याय, सामुदायिक अनुशासन आ विधिक अधिकार अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'पंचैती'क शीर्षक समाजक समवेत विवेकक संकेत दैत अछि, मुदा कथाक भीतर सामुदायिक निर्णय स्वयं बहिष्कारक औजार बनैत अछि। अन्तर्जातीय प्रेम-विवाहक प्रसंग जाति आ पितृसत्ता केना एक-दोसराकेँ मजबूत करैत अछि, तकर दृश्यात्मक परीक्षण एतय अपेक्षित अछि। ठाकुर ई उलटबाँसी पकड़ैत छथि।

गीता आ ललिताक स्त्री-पात्रक भिन्न भूमिका देखबैत अछि जे प्रतिरोध एकमात्र नायकीय घोषणा नहि। निर्णयक अधिकार, मौनक सामाजिक कारण आ समूहक भयक परत खोलने बिना 'समाज' केँ एकरूप अत्याचारी अथवा उद्धारक घोषित करब सहज सरलीकरण होयत।

१७. 'पंचैती' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

नौ दृश्यक लघु रूप पटकथाकेँ गति दैत अछि, मुदा कानूनी अधिकारक सामान्य उल्लेख तथा वास्तविक न्याय-प्रक्रियाक ऐतिहासिक सत्यापन अलग स्तर अछि। सम्पादकीय आलोचना जँ ई अन्तर राखय तँ विधिक दावाक अनुचित निश्चिततासँ बचल जा सकैत अछि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : समूहक निर्णयसँ व्यक्तिगत सहमति धरि कथा कतेक दृश्यात्मक रास्ता बनबैत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

१८. 'त्रिवेणीक रंग' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र 'रूसल बौआ', 'दोख केकर', 'डरक नदी'; मेला, वस्त्र, गर्भहानि, पारिवारिक आरोप, वृद्धावस्था आ स्वप्न अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'त्रिवेणीक रंग'मे तीन कथा घरेलू जीवनक भीतर सामाजिक शक्ति देखबैत अछि। 'रूसल बौआ'क मेला आ वस्त्र बालकक आर्थिक भिन्नताकेँ स्पर्शनीय बनबैत अछि; 'दोख केकर'क कथाभीतर कथा आरोप आ स्मृतिक नैतिक असमानता खोलैत अछि; 'डरक नदी'क स्वप्न वृद्धावस्था आ पारिवारिक असुरक्षाकेँ भिन्न काल-रूपमे राखैत अछि।

तीनू कथाक साझा अन्तर्ध्वनि पीड़ा अछि, मुदा ओकर कथन-तरीका समान नहि। बालकक प्रत्यक्ष उत्तर, घरेलू बहसक रहस्योद्घाटन आ स्वप्नसँ जागरणक परिवर्तन तीन अलग आख्यानिक युक्ति छथि। ठाकुरक समीक्षा एहि भिन्नताकेँ व्याख्याक केन्द्र बनबैत अछि; एकहि सामाजिक उपदेशमे समेटलासँ साहित्यिक विशिष्टता हराएत।

१९. 'त्रिवेणीक रंग' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

स्त्रीक गर्भहानि, वृद्धक भय अथवा गरीब बालकक इच्छा पर विचार करैत समय सहानुभूति जरूरी अछि, मुदा सहानुभूति साहित्यिक संरचनाक विश्लेषणक विकल्प नहि। कथाक अन्त कतेक उत्तर दैत अछि आ कतेक खुलल छोड़ैत अछि, से मूल्यांकनक जाँच अछि।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : तीनू कथामे भय आ अभावक अनुभव कोन-कोन दृष्टिबिन्दु आ काल-परिवर्तनसँ पाठक धरि पहुँचैत अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

२०. 'वापसी' : पाठ-क्षेत्र आ आलोचनाक कसौटी

उपलब्ध अध्ययनक केन्द्र 'वापसी' आ 'सम्बन्ध' दू एकांकी; दहेज, लौटाओल वस्तु, भायक पहिचान, उत्तराधिकार आ अविश्वास अछि। एहि विविध प्रसंगक साहित्यिक अर्थ स्पष्ट करबाक लेल कथ्यक सार आ ओकर अभिव्यक्तिक प्रणालीकेँ अलग-अलग पहचानब जरूरी अछि।

'वापसी' नामक एकांकी-संग्रहक दू पाठ 'वापसी' आ 'सम्बन्ध' घरक भीतर धन आ आत्मीयताक सम्बन्धक परीक्षा करैत छथि। पहिलमे दहेजक वस्तु वापस होएबाक घटना प्रतिष्ठाक वास्तविक पुनर्स्थापना नहि करैत; दोसरमे भायक पहिचान आ सम्पत्तिक आशंका पारिवारिक सम्बन्धक मूल प्रश्न बनैत अछि। शीर्षकक पुनरागमन आ नैतिक अपूर्णताक अन्तर एतय विशेष अर्थवान अछि।

संक्षिप्त नाट्यरूपमे संवादक तनाव, स्थल-सीमा आ निर्णायक दृश्यक अर्थ बड़ होइत अछि। गामक चौबटिया, समधीक घर वा स्मृतिक सन्दर्भ केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि; ओ चरित्रक सामाजिक प्रतिष्ठाक परीक्षा स्थल बनैत अछि।

२१. 'वापसी' : आलोचनात्मक उपलब्धि आ अगिला प्रश्न

जँ दहेजक लोभक अन्त एक व्यक्तिक अचानक पश्चात्तापसँ होइत अछि तँ सामाजिक संरचना ओतबे अनछुअल रहि सकैत अछि। समीक्षाकेँ नाटकक नैतिक प्रस्ताव आ ओकर दृश्यकृत परिणामक बीच दूरी स्पष्ट रखबाक चाही।

एहि कृति-विषयक सम्पादकीय अनुशीलनक प्रश्न : वस्तु, नाम आ सम्बन्धक 'वापसी' मे कोन वापसी सम्भव आ कोन असम्भव देखाओल गेल अछि?

समग्र निर्णय एतबे धरि निश्चित अछि जे ठाकुरक अध्ययन पाठककेँ अनेक अर्थद्वार खोलैत अछि; अन्तिम ग्रन्थ-सत्यापन लेल मूल कृतिक पूर्ण प्रति, संस्करण आ उपयुक्त पाठ-स्थानक मिलान आवश्यक रहत।

तृतीय विभाग : साझा सूत्र आ विधागत प्रश्न

२२. जल आ भूगोल : पर्यावरणक सक्रिय भूमिका

'अम्बरा'क बाढ़ि, 'बसुंधरा'क धरती आ 'जल भँवर'क सामाजिक जलगति एक साझा पारिस्थितिक क्षेत्र बनबैत अछि। मुदा हर ठाम जलक कार्य अलग अछि—कवितामे दृश्य, उपन्यासमे कथागति आ सामाजिक संकट, तेसर ठाम भूमि-संसाधनक भौतिक शर्त। प्रकृतिक एक सार्वत्रिक 'प्रतीक' थोपने बिना एकर विधा-विशिष्ट काम देखब उपयोगी अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

२३. जाति, पंचायत आ सामाजिक न्याय

'हमर टोल', 'जल भँवर', 'जाल' आ 'पंचैती'मे सामुदायिक संस्थानक न्याय-दावा बारम्बार प्रश्नित होइत अछि। व्यक्तिगत अत्याचारी पात्रक दण्ड दैत कथा कखन संस्थागत असमानता

बदलैत अछि? ई स्थायी प्रश्न अछि। स्त्रीक सहमति आ जाति-नियन्त्रणक संघर्षक अलग-अलग दृश्य एक व्यापक समाजिक समीक्षा बनबैत अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

२४. स्त्रीक देह सँ स्त्रीक निर्णय धरि

‘बसुंधरा’क डाइन-आरोप, ‘लाज’क सविता, ‘पंचैती’क गीता-ललिता आ ‘जाल’क बरसा समान सामाजिक परिस्थिति नहि। किछु प्रसंग स्त्रीक दुःख प्रस्तुत करैत अछि; किछु ओकर निर्णय-क्षमता। पाठक प्रश्न ई जे आवाज कोन स्तरपर स्वतन्त्र अछि आ समापनक अर्थ ककरा द्वारा तय होइत अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

२५. विधाक भिन्नता : कविता, कथा, उपन्यास, पटकथा

नओ अध्ययनक बड़ महत्त्व विधागत विस्तार अछि। कविताक लय, उपन्यासक काल-विन्यास, कथाक दृष्टिबिन्दु आ पटकथाक दृश्यक्रमक कसौटी अलग होइत अछि। एके ‘सामाजिक सरोकार’ शब्द सभ पर समान रूपेँ लागू करब समीक्षा सीमित करैत अछि। विधासापेक्ष निकटपाठ एही कारण जरूरी अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब

आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

२६. घर, सम्पत्ति आ प्रतिष्ठाक अर्थनीति

‘त्रिवेणीक रंग’क घरेलू तनाव आ ‘वापसी’क दहेज-उत्तराधिकार प्रश्न देखबैत अछि जे घर केवल स्नेहक सुरक्षित स्थान नहि। धन, पीढ़ी, वस्त्र, गर्भहानि आ परम्पराक मान सम्बन्धक अर्थ निर्धारित करैत अछि। एहि सम्बन्धक जटिलता नाटकीय अन्तमे सहज समाधानक प्रतिरोध करैत अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

२७. कथनकर्ता आ बहुवाचिकताक सावधानी

अनेक पात्रक उपस्थिति बहुवाचिकता नहि। कथा कोन पात्रकेँ अन्तिम अर्थ निर्धारणक अधिकार दैत अछि, कोन आवाज उद्धरणमे सीमित अछि, ककर मौन अर्थवान अछि—एहि प्रश्नक आधारपर समूच नौ अध्ययन फेर पढ़ल जा सकैत अछि।

एहि साझा सूत्रक उपयोग सँ पूर्ववर्ती अध्ययनसभक आपसी सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक रचनाक विधागत वैशिष्ट्य, कथन-क्रम आ पाठीय प्रमाण सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। तुलना केवल विषय-साम्यक नाम नहि; अलग शिल्प आ अलग निष्कर्षक बीच तर्क-संगतिक परीक्षा थिक।

चतुर्थ विभाग : आख्यान, प्रमाण-विवेक आ सम्पादन

२८. आलोचना पर आलोचना : प्रमाणक दू स्तर

एहि खण्डक विषय गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लिखल साहित्यिक अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। समीक्षाधीन कृतिक मूल कथन, ठाकुरक चयनित उद्धरण आ वर्तमान सम्पादकीय निर्णय तीन अलग स्तर मानल गेल अछि। कोनो कथानक-तथ्य वा प्रकाशन-इतिहासक दावा केवल अध्ययनमे लिखल होएबाक कारण स्वतंत्र सत्यापित तथ्य नहि बनैत। ई अन्तर लेखकक श्रमक महत्त्व घटबैत नहि, बल्कि पाठक समक्ष स्रोतक सही स्थिति स्पष्ट करैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

२९. उद्धरण, पृष्ठ आ सन्दर्भक नीति

समीक्षाक आदर्श सन्दर्भ केवल ग्रन्थनामक सूची नहि, विशिष्ट पाठ-स्थानक साक्ष्य अछि। एकटा तीक्ष्ण निष्कर्षक संग मूल पद्य, प्रसंग वा दृश्य, संस्करण, पृष्ठ आ आलोचकक व्याख्या देखाओल गेल तँ पाठक स्वतन्त्र रूपेँ तर्क जाँचि सकैत छथि। उपलब्ध स्रोत-आधारित ई समीक्षा जे मूल स्वतंत्र कृति नहि देखलनि, तकरा विषयमे प्रत्यक्ष परीक्षणक दावा नहि करैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

३०. सामाजिक विषय आ कलात्मक रूपक अन्तर

जाति, स्त्री, श्रम, शासन वा पर्यावरण सन गम्भीर प्रश्न साहित्यक आवश्यक विषय भऽ सकैत छथि, मुदा विषयक नैतिक अनिवार्यता अपनहि सफल कविता वा आख्यानक प्रमाण नहि।

ध्वनि, वाक्य, दृष्टिबिन्दु, दृश्य, कथागति, विराम, मौन आ अन्तिम मोड़क परीक्षा साहित्यिक निर्णयकेँ तर्कसंगत बनबैत अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

३१. सावधान भाषा आ विवाद्य कथन

जहाँ तथ्यक स्वतंत्र मूल अभिलेख उपलब्ध नहि अछि ओतय ‘अध्ययनक अनुसार’, ‘प्रस्तुत पाठमे’, ‘सम्भावित’, ‘पुनः सत्यापन अपेक्षित’ सन भाषा अपनाओल गेल अछि। साहित्यिक रूपक, पात्रक कथन आ काल्पनिक घटनाकेँ सामाजिक इतिहासक प्रमाणक रूपमे सीधे स्वीकार कएल नहि गेल अछि।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

३२. भाषिक रूप, लोकबोली आ सम्पादन

मैथिलीक विविध वाक्यरूप, बोली आ मिश्रित शब्दावलीकेँ यान्त्रिक शुद्धताक नामपर मिटाएब उचित नहि। मुदा लेखकक उद्धरण, समीक्षकक वाक्य आ प्रकाशकीय सूचना बीच वर्तनी-संगति पाठकीय सुविधा लेल आवश्यक अछि। संशोधित संस्करणमे शीर्षक, व्यक्तिनाम आ ग्रन्थनामक एकरूपता सुरक्षित रखब चाही।

प्रस्तुत खण्डक संशोधित आलोचना-संस्करणक लेल एहि आधारपर पर्याप्त पाठीय उदाहरण, स्पष्ट संदर्भ आ विरोधी व्याख्याक सम्भावना सँगे राखल जाए। एहन प्रक्रिया मैथिली आलोचनाक सार्वजनिक सत्यापन-क्षमता बढ़बैत अछि।

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

३३. सम्पादकीय उपलब्धि : आलोचनात्मक सार्वजनिकता

गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययनसभक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे उपेक्षित वा कम चर्चित रचनाकेँ सामान्य परिचयक स्थानपर प्रश्नोन्मुख पठनक अवसर देल गेल अछि। साहित्यिक पाठक बीच सामाजिक अनुभव, लोकभाषा आ कलात्मक शिल्पक सम्बन्धपर चर्चा एतय सक्रिय होइत अछि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

३४. सम्भावित सीमा : कथासार, नैतिक निष्कर्ष आ निकटपाठ

विस्तृत सामाजिक व्याख्या कतहु मूल पद्यांश अथवा दृश्य-संगत विश्लेषणक अपेक्षा अधिक स्थान लैत अछि। नैतिक रूपसँ समुचित निष्कर्ष जँ पाठक रूपात्मक संगतिक बिना राखल जाए तँ आलोचना घोषणामूलक बनि सकैत अछि। एहि कारण प्रत्येक महत्त्वपूर्ण मूल्यनिर्णयक लग एक प्रतिनिधि पाठ-साक्ष्य आ विरोधी पाठ-सम्भावना देब उचित होयत।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

३५. अगिला संस्करणक संशोधन-कार्यसूची

सम्बन्धित मूल पुस्तकक प्रमाणित प्रति, संस्करण-विवरण, विशिष्ट पृष्ठ, सम्भव भेला पर दोसर साक्ष्य, प्रत्यक्ष उद्धरणक मिलान आ समान विधाक भिन्न कृतिक तुलना अगिला संस्करणमे जोड़ल जाए। विषय-विशेषक सामान्य इतिहास आ स्रोतपुस्तकक कथनकेँ अलग सूचीमे राखल जाए, जाहिसँ पाठक स्वतंत्र जाँच कऽ सकथि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

३६. अन्तिम साहित्यिक निर्णय

प्रस्तुत सम्पादकीय पठन न प्रशंसामूलक परिचय अछि, न दोष-सूची। एकर उद्देश्य अध्ययनसभक सही उपलब्धि चिह्नब, उद्धृत साक्ष्यक सीमा स्पष्ट करब आ अधिक कठोर निकटपाठ लेल रास्ता प्रस्तावित करब अछि। विवेकशील मैथिली आलोचनामे सहानुभूति, रूपविचार आ स्रोत-सावधानी तीनू आवश्यक छथि।

ई निर्णय उपलब्ध DOCX अध्ययनक आधारपर बनल सम्पादकीय मूल्यांकन अछि; मूल लेखकक समूच प्रकाशित रचनाक सम्पूर्ण निर्णायक आकलन नहि।

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अनुशीलन-प्रश्न

३७. अध्ययन-पत्र : 'अम्बरा'

विधा : कविता। पाठ-क्षेत्र : २००८ केर कोसी-बाढ़क पृष्ठभूमि; 'बाढ़िक चित्र'क छः दृश्य; 'जाति', 'चीड़ीक जाति', 'त्रिशंकु' आ श्रमक बिम्ब।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : छः दृश्यक कथन-क्रममे पीड़ित व्यक्तिक प्रत्यक्ष आवाज कतए अछि आ कतए कविक निर्णायक नैतिक टिप्पणी?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

३८. अध्ययन-पत्र : 'बसुंधरा'

विधा : कविता। पाठ-क्षेत्र : 'अकाल', 'नँगरा मजदूर', 'कटैत गाछ'; खेती, भूमि, स्त्रीपर डाइन-आरोप, श्रम आ पर्यावरण।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : 'धरती'क रूपक किसान, स्त्री, मजदूर आ वृक्षक आवाजकेँ समान अधिकार दैत अछि कि एक प्रतिनिधि स्वर सभ पर हावी अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

३९. अध्ययन-पत्र : 'हमर टोल'

विधा : उपन्यास। पाठ-क्षेत्र : टोलक सामूहिक जीवन; निर्मला, अजय–शीला, खेलावन भगत; जाति, धर्माधिकार, स्वास्थ्य, चुनाव आ श्रम।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : ककरा सबकेँ टोलक सदस्य मानल गेल अछि, ककर आवाज विमर्शक बाहर रहि जाइत अछि आ कथावाचकक सहानुभूति कोना वितरित होइत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

४०. अध्ययन-पत्र : 'जल भँवर'

विधा : उपन्यास। पाठ-क्षेत्र : राजेसर–नीता; प्रेम, पंचायत, स्वप्न, कोसी, रोग, बाढ़ि आ जातिगत वर्जना।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : कथाक स्वप्न-क्रम आ वास्तविक घटना-क्रम अलग लिखलासँ 'भँवर'क संरचनात्मक अर्थ कतेक स्पष्ट होयत?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

४१. अध्ययन-पत्र : 'जाल'

विधा : पटकथा। पाठ-क्षेत्र : विक्रम, बरसा, सुइदचन, हरिया, फुलिया, चनकी; ऋण, जाति, विवाह, राज्यसेवा आ दृश्य-विन्यास।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : पटकथाक कोन दृश्य वाचिक व्याख्याक बदला दृश्यात्मक क्रियासँ शक्ति-सम्बन्ध देखबैत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

४२. अध्ययन-पत्र : 'लाज'

विधा : एकांकी। पाठ-क्षेत्र : सविता; नौ दृश्य; स्त्रीशिक्षा, जमीनदारी प्रभुत्व, चिकित्सकीय सेवा आ नैतिक प्रत्यभिज्ञान।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : सविताक शिक्षा ओकर अपन भविष्यक निर्णयक अधिकार बनैत अछि कि नाटकक नैतिक पुरस्कार?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

४३. अध्ययन-पत्र : 'पंचैती'

विधा : लघु पटकथा। पाठ-क्षेत्र : नौ दृश्य; अन्तर्जातीय विवाह; गीता, ललिता; लोकन्याय, सामुदायिक अनुशासन आ विधिक अधिकार।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : समूहक निर्णयसँ व्यक्तिगत सहमति धरि कथा कतेक दृश्यात्मक रास्ता बनबैत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

४४. अध्ययन-पत्र : 'त्रिवेणीक रंग'

विधा : कथा। पाठ-क्षेत्र : 'रूसल बौआ', 'दोख केकर', 'डरक नदी'; मेला, वस्त्र, गर्भहानि, पारिवारिक आरोप, वृद्धावस्था आ स्वप्न।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : तीनू कथामे भय आ अभावक अनुभव कोन-कोन दृष्टिबिन्दु आ काल-परिवर्तनसँ पाठक धरि पहुँचैत अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

४५. अध्ययन-पत्र : 'वापसी'

विधा : एकांकी। पाठ-क्षेत्र : 'वापसी' आ 'सम्बन्ध' दू एकांकी; दहेज, लौटाओल वस्तु, भायक पहिचान, उत्तराधिकार आ अविश्वास।

अगिला अनुशीलनक मूल प्रश्न : वस्तु, नाम आ सम्बन्धक 'वापसी' मे कोन वापसी सम्भव आ कोन असम्भव देखाओल गेल अछि?

पाठ-सत्यापनक क्रम : (१) मूल कृतिक प्रमाणित संस्करण; (२) प्रतिनिधि उद्धरण आ प्रसंग; (३) ठाकुरक व्याख्या; (४) सम्भावित भिन्न पठन; (५) सीमित, साक्ष्याधारित साहित्यिक निर्णय।

४६. अन्तिम सम्पादकीय निवेदन

'नित नवल राजदेव मण्डल'क अध्ययनसभ साहित्यिक संवादक एक उपयोगी आधार उपलब्ध करबैत छथि। एतय प्रस्तुत समीक्षा ओहि संवादकेँ अधिक कठोर स्रोत-विवेक, शिल्प-परीक्षा आ प्रतिनिधित्वक प्रश्नक संग आगाँ बढ़ेबाक प्रस्ताव रखैत अछि। अध्ययनक महत्त्व मानब आ ओकर सीमाकेँ चिह्नब एक-दोसराक विरोध नहि; ई दुनू समीक्षाक नैतिक अनुशासनक अंग छथि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार। विदेह, २०२७।

पाठाधार आ सन्दर्भ

प्राथमिक सम्पादकीय पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, “‘नित नवल राजदेव मण्डल’”, उपयोगकर्ताद्वारा प्रदत्त DOCX पाण्डुलिपि।

समीक्षित कृतिसभक शीर्षक आ विषय-विवरण प्रस्तुत पाठाधारसँ लेल गेल अछि। मूल स्वतंत्र ग्रन्थसभक प्रत्यक्ष परीक्षण आ बाहरी अभिलेख-सत्यापन एहि संस्करणमे शामिल नहि अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८५

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल राजदेव मण्डल’क नओ अध्ययनक समीक्षा अछि—‘अम्बरा’, ‘बसुंधरा’, ‘हमर टोल’, ‘जल भँवर’, ‘जाल’, ‘लाज’, ‘पंचैती’, ‘त्रिवेणीक रंग’ आ ‘वापसी’। कविता, उपन्यास, पटकथा, कथा आ एकांकीक बीच लोकजीवनक व्यापक साहित्यिक परिप्रेक्ष्य खुलैत अछि।

कोसीक बाढ़ि, किसानक श्रम, जाति, स्त्रीक स्वायत्तता, पंचैती, दहेज, पारिवारिक सम्बन्ध आ दृश्य-विन्यास पर आख्यानशास्त्रीय आ प्रमाण-सावधान आलोचना अछि। मूल ग्रन्थसभक पूर्ण स्वतंत्र पाठ उपलब्ध नहि होयबाक सीमा स्पष्ट कएल गेल अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय निर्णय

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur